

डैनियल की पुस्तक - नंबर एक

ऊलै और हिद्देकेल

Jeff Pippenger

2023-11-21

पादरियों और लोगों ने घोषित किया कि दानिय्येल और प्रकाशितवाक्य की भविष्यवाणियाँ असमझनीय रहस्य हैं। परन्तु मसीह ने अपने चेलों को उनके समय में होने वाली घटनाओं के विषय में भविष्यवक्ता दानिय्येल के वचनों की ओर निर्देश किया, और कहा, 'जो पढ़े, वह समझे।' मत्ती 24:15। और यह दावा कि प्रकाशितवाक्य एक ऐसा रहस्य है जिसे समझना नहीं है, स्वयं इस पुस्तक के शीर्षक से ही खंडित होता है: 'यीशु मसीह का प्रकाशितवाक्य, जिसे परमेश्वर ने उसे इसलिए दिया कि वह अपने दासों को वे बातें दिखाए जो शीघ्र होने वाली हैं. . . धन्य है वह जो पढ़ता है, और वे जो इस भविष्यवाणी के वचन सुनते हैं, और जो उसमें लिखी बातों का पालन करते हैं; क्योंकि समय निकट है।' प्रकाशितवाक्य 1:1-3।

"भविष्यवक्ता कहता है: 'धन्य है वह जो पढ़ता है'—कुछ ऐसे भी हैं जो पढ़ना नहीं चाहते; आशीष उनके लिए नहीं है। 'और जो सुनते हैं'—कुछ ऐसे भी हैं जो भविष्यवाणियों के संबंध में किसी बात को सुनने से इनकार करते हैं; इस वर्ग के लिए आशीष नहीं है। 'और जो उसमें लिखी हुई बातों का पालन करते हैं'—कई लोग प्रकाशितवाक्य में निहित चेतावनियों और निर्देशों पर ध्यान देने से इनकार करते हैं। इनमें से कोई भी प्रतिज्ञात आशीष का दावा नहीं कर सकता। जो भी भविष्यवाणी के विषयों का उपहास करते हैं, और यहाँ गंभीरता से दिए गए प्रतीकों का मज़ाक उड़ाते हैं, जो भी अपने जीवन में सुधार करने और मनुष्य के पुत्र के आगमन के लिए तैयारी करने से इनकार करते हैं, वे आशीषित नहीं होंगे।"

दैवीय प्रेरणा की गवाही के आलोक में, मनुष्य यह कैसे सिखाने का साहस कर सकते हैं कि प्रकाशितवाक्य एक ऐसा रहस्य है जो मानव समझ की पहुँच से परे है? यह एक प्रकट किया हुआ रहस्य है, एक खुली पुस्तक। प्रकाशितवाक्य का अध्ययन मन को दानिय्येल की भविष्यवाणियों की ओर ले जाता है, और दोनों मिलकर अत्यंत महत्वपूर्ण शिक्षा प्रस्तुत करते हैं, जो परमेश्वर ने मनुष्यों को इस संसार के इतिहास के अंत में घटित होने वाली घटनाओं के विषय में दी है। महान संघर्ष, 340.

'प्रकाशितवाक्य का अध्ययन मन को दानिय्येल की भविष्यवाणियों की ओर निर्देशित करता है।' कुछ लोग दानिय्येल की पुस्तक में केवल भविष्यवाणी ही देखते हैं। परन्तु दानिय्येल सत्य की दो धाराएँ प्रस्तुत करता है, और उसकी भविष्यवाणियों का प्रतिनिधित्व उसकी पुस्तक के अंतिम छह अध्याय करते हैं। पहले छह अध्याय चित्रात्मक भविष्यवाणियाँ प्रस्तुत करते हैं, जो प्रायः अब भी पहचानी नहीं गई हैं। दानिय्येल के पहले छह अध्यायों पर विचार करने से पहले, हम यह स्पष्ट करेंगे कि वास्तव में दानिय्येल के अंतिम छह अध्यायों में केवल दो ही भविष्यवाणियाँ प्रस्तुत की गई हैं। सिस्टर व्हाइट शिनार की दो महान नदियों का उल्लेख करके उन दो भविष्यवाणियों की ओर संकेत करती हैं। जब हम उनके द्वारा प्रस्तुत प्रतीकवाद को स्वीकार करते हैं, तब हमें दानिय्येल के अंतिम छह अध्यायों में दो, और केवल दो, भविष्यवाणियाँ देखने की कुंजी मिलती है।

"जो प्रकाश दानिय्येल को परमेश्वर से मिला था, वह विशेष रूप से इन अंतिम दिनों के लिए दिया गया था। शिनार की महान नदियों उलै और हिद्देकेल के किनारों पर उसने जो दर्शन देखे थे, वे अब पूरी होने की प्रक्रिया में हैं, और पूर्वकथित सभी घटनाएँ शीघ्र ही घटित होंगी।" Testimonies to Ministers, 112.

अध्याय आठ का दर्शन उलाई नदी के पास दिया गया था।

राजा बेलशस्सर के राज्य के तीसरे वर्ष में, जो दर्शन पहले मुझे हुआ था उसके बाद, मुझे अर्थात् दानिय्येल को, एक और दर्शन हुआ। और मैंने दर्शन में देखा; और ऐसा हुआ कि जब मैं देख रहा था, तब मैं एलाम प्रान्त में

स्थित शूशन के गढ़ में था; और मैंने दर्शन में देखा कि मैं ऊलाई नदी के किनारे था। दानियेल 8:1, 2.

जब हमने "Testimonies to Ministers" से वह अनुच्छेद लिया, जहाँ सिस्टर व्हाइट ने "उलाई और हिदेकेल" का उल्लेख किया और उन्हें "शिनार की महान नदियाँ" कहा, तब हम उस अनुच्छेद का विश्लेषण कर रहे थे, जो सिस्टर व्हाइट की रचनाओं में दानियेल और प्रकाशितवाक्य की पुस्तकों के अध्ययन पर सबसे महत्वपूर्ण टीकाओं में से एक का हिस्सा है। उस अंश में वह कहती हैं, "परमेश्वर के वचन का और भी निकटता से अध्ययन करने की आवश्यकता है; विशेषकर दानियेल और प्रकाशितवाक्य पर वैसा ध्यान दिया जाना चाहिए जैसा हमारे कार्य के इतिहास में पहले कभी नहीं दिया गया।"

यदि हम दानियेल के आठवें अध्याय के वे पहले दो पद, जिन्हें हमने अभी उद्धृत किए हैं, ध्यान से अध्ययन करें, तो वे एक ऐसे तथ्य के दो आंतरिक प्रमाण देते हैं जिसे अक्सर नज़रअंदाज़ किया जाता है। दानियेल कहता है, "बेलशज्जर के तीसरे वर्ष में मुझे एक दर्शन प्रकट हुआ।" फिर वह जोड़ता है, "पहले जो मुझे प्रकट हुआ था उसके बाद।" इस पद को दो तरीकों से समझा जा सकता है, और दोनों ही तरीकों से वही निष्कर्ष निकलता है।

स्वर्गदूत गब्रियल वही था जिसने दानियेल को भविष्यवाणी का प्रकाश दिया, जैसे उसने सभी भविष्यद्वक्ताओं को दिया, क्योंकि उसने स्वर्गीय प्रकाश-वाहक के रूप में शैतान का स्थान ले लिया था। इसका अर्थ है कि पवित्रशास्त्र में पाए जाने वाले हर भविष्यवाणी-संबंधी नियम का मार्गदर्शन गब्रियल ने किया। दानियेल ने इसे समझा या नहीं, अध्याय 8 की पहली आयत में वह न केवल एक महत्वपूर्ण भविष्यवाणी-संबंधी अवलोकन की पहचान करता है, बल्कि उसी आयत में उस महत्वपूर्ण अवलोकन के दो गवाह भी प्रस्तुत करता है। पहली आयत में दानियेल ने यह दर्ज किया कि ऊलाई नदी के पास उसे जो दृष्टि मिली थी, उससे पहले भी उसे एक दृष्टि मिली थी। ऊलाई नदी वाली वह दृष्टि बेलशज्जर के तीसरे वर्ष में आई। ऊलाई नदी वाली दृष्टि से पहले की वह दृष्टि बेलशज्जर के पहले वर्ष में आई थी।

बाबुल के राजा बेलशस्सर के पहले वर्ष में, दानियेल ने अपने बिछौने पर एक स्वप्न देखा और उसके सिर पर दर्शन हुए; तब उसने उस स्वप्न को लिखा, और उन बातों का सार बताया। दानियेल 7:1.

अध्याय आठ की पहली आयत में दानियेल यह बताता है कि बेलशस्सर के पहले वर्ष में उसे भी एक दर्शन हुआ था, क्योंकि वह कहता है, "जो पहले मुझे प्रकट हुआ था, उसके बाद।" क्या ऊलाई का दर्शन बेलशस्सर के पहले वर्ष के दर्शन के बाद प्रकट हुआ, या यह दर्शन दो समानांतर दर्शनों में से पहले वाले के बाद प्रकट हुआ? दोनों उत्तर सही हैं। ऊलाई नदी का दर्शन अध्याय सात के दर्शन के समान, वही दर्शन है। गब्रिएल "दोहराना और विस्तार करना" नामक भविष्यवाणी के सिद्धांत का उपयोग कर रहा है, और साथ ही उस नियम का भी कि दो गवाहों की गवाही से कोई बात ठहराई जाती है। दोनों दर्शन बाइबल की भविष्यवाणी के राज्यों से संबंधित हैं।

अध्याय सात का दर्शन उन राज्यों को शिकारी पशुओं के रूप में चित्रित करता है, और इस प्रकार उन्हें उनकी नागरिक सत्ता के परिप्रेक्ष्य में उभार कर प्रस्तुत करता है। अध्याय आठ का दर्शन उन्हीं राज्यों को परमेश्वर के पवित्रस्थान-सेवा के प्रतीकों द्वारा चित्रित करता है; यद्यपि पवित्रस्थान-सेवा के प्रत्येक प्रतीक को जानबूझकर विकृत किया गया है, ताकि नकली उपासना का प्रतिनिधित्व किया जा सके। दानियेल अध्याय आठ, अध्याय सात के दर्शन की ही तरह उन्हीं राज्यों को चित्रित करता है, परंतु यह उन राज्यों को उनके धार्मिक संदर्भ में रखता है।

दानियेल के अध्याय आठ का उलाई वाला दर्शन, अध्याय सात के दर्शन को दोहराता और विस्तृत करता है। अध्याय सात बाइबल की भविष्यवाणी में वर्णित राज्यों के नागरिक पक्ष को चिन्हित करता है, और अध्याय आठ उन राज्यों के धार्मिक पक्ष को चिन्हित करता है। जब यह समझ लिया जाता है, तब समझा जा सकता है कि अध्याय सात और आठ एक ही दर्शन हैं। अध्याय नौ में गब्रिएल आता है और अध्याय आठ के दर्शन में समय के पहलू की व्याख्या देता है। इसलिए, उलाई का दर्शन दानियेल की पुस्तक के अध्याय सात, आठ और नौ का प्रतिनिधित्व करता है। फिर अध्याय दस में हिदेकेल नदी का परिचय कराया जाता है।

फारस के राजा कूरेश के तीसरे वर्ष में दानिय्येल को, जिसका नाम बेल्लशज्जर कहलाता था, एक बात प्रकट की गई; और वह बात सच्ची थी, पर नियत समय लंबा था; और उसने उस बात को समझा, और उस दर्शन की समझ भी पाई। उन दिनों मैं दानिय्येल तीन पूरे सप्ताह शोक करता रहा। मैंने कोई स्वादिष्ट भोजन नहीं खाया, न मांस और न दाखरस मेरे मुंह में आए, न मैंने तन पर तेल लगाया, जब तक तीन पूरे सप्ताह पूरे न हो गए। और पहले महीने के चौबीसवें दिन, जब मैं उस बड़ी नदी के किनारे था जिसका नाम हिद्देकेल है। दानिय्येल 10:1-4.

हिद्देकेल नदी का दर्शन उत्तर के राजा के भविष्यवाणी संबंधी इतिहास का परिचय देता है। यह सिकंदर महान के राज्य के टूटने से शुरू होता है, उसके बाद के इतिहास के उत्थान-पतन का वर्णन करता है, जहाँ अंततः सिकंदर महान के पूर्व राज्य के विघटन से बची हुई केवल दो विरोधी शक्तियाँ शेष रह जाती हैं—एक शाब्दिक दक्षिण का राजा और एक शाब्दिक उत्तर का राजा। अंत में यह पापाई सत्ता के इतिहास तक पहुँचता है, जो तब उत्तर का आध्यात्मिक राजा बन जाती है; और ग्यारहवें अध्याय के अंत में, वह अपने अंत को पहुँचती है, मिखाएल खड़ा होता है और मानव अनुग्रह का समय समाप्त हो जाता है। सरल सारांश यह है कि ऊलाई नदी का दर्शन परमेश्वर के पवित्रस्थान और उसकी सेना का आंतरिक दर्शन है, और हिद्देकेल नदी उसी इतिहास के दौरान परमेश्वर और उसकी प्रजा के शत्रु का बाहरी दर्शन है। यह उसी सिद्धांत को अपनाता है जो प्रकाशितवाक्य की सात कलीसियाओं और सात मुहरों में पाया जाता है।

"बहुत से पादरी प्रकाशितवाक्य की व्याख्या करने का कोई प्रयास नहीं करते। वे इसे अध्ययन के लिए लाभहीन पुस्तक कहते हैं। वे इसे मुहरबंद पुस्तक मानते हैं, क्योंकि इसमें चित्रों और प्रतीकों का विवरण है। परन्तु उसे जो नाम दिया गया है, 'प्रकाशितवाक्य', वही इस धारणा का खंडन करता है। प्रकाशितवाक्य एक मुहरबंद पुस्तक है, पर यह एक खुली पुस्तक भी है। यह इस पृथ्वी के इतिहास के अंतिम दिनों में घटने वाली अद्भुत घटनाओं को दर्ज करती है। इस पुस्तक की शिक्षाएँ निश्चित और स्पष्ट हैं; वे न तो रहस्यमय हैं और न ही दुर्बोध। इसमें वही भविष्यवाणी की धारा उठाई गई है जैसी दानिय्येल में है। कुछ भविष्यवाणियों को परमेश्वर ने दोहराया है, इस प्रकार दर्शाते हुए कि उन्हें महत्व दिया जाना चाहिए। प्रभु उन बातों को नहीं दोहराते जिनका कोई बड़ा महत्व नहीं होता।" Manuscript Releases, खंड 8, 413.

दानिय्येल की पुस्तक में जिस आंतरिक और बाह्य इतिहास का निरूपण किया गया है, वही प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में भी लिया गया है। इन दोनों दर्शनों से उत्पन्न भविष्यवाणी के प्रकाश के अतिरिक्त, बाइबिल-व्याख्या की उस पद्धति की भी पुष्टि होती है जिसे पहले विलियम मिलर ने, और तत्पश्चात् फ्यूचर फॉर अमेरिका ने, अपनाया था। उचित रूप से देखा जाए तो, दानिय्येल की पुस्तक और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक, दोनों ही, भविष्यवाणी की व्याख्या के उन सिद्धांतों की पुष्टि के लिए वास्तव में सोने की खानें हैं, जिन्हें बाइबिल स्वयं अपने भीतर चिह्नित करती है।

उलाई, जो आंतरिक विषय है, और हिद्देकेल, जो बाहरी है, उन दो भविष्यवाणियों का भी प्रतिनिधित्व करते हैं जिन्हें "अंत के समय" खोला जाना था। उलाई की भविष्यवाणी "अंत के समय" सन् 1798 में खोली गई, और हिद्देकेल की भविष्यवाणी "अंत के समय" सन् 1989 में, जब, जैसा कि दानिय्येल अध्याय ग्यारह, पद चालीस में वर्णित है, पूर्व सोवियत संघ का प्रतिनिधित्व करने वाले देश पापाई सत्ता और संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा बहा दिए गए।

जब इन तथ्यों को पहचाना जाता है, तब यह भी पहचाना जा सकता है कि दोनों दर्शन वास्तव में एक ही दर्शन हैं, जैसे सात कलीसियाएँ और सात मुहरें एक ही भविष्यवाणी के इतिहास का प्रतिनिधित्व करती हैं। तब ये दोनों दर्शन वह माध्यम बन जाते हैं जिसका उपयोग प्रभु ने पहले स्वर्गदूत के पिछले आंदोलन में किया था, और जिसका उपयोग प्रभु तीसरे स्वर्गदूत के वर्तमान और भविष्य के आंदोलन में करेंगे, ताकि दानिय्येल अध्याय बारह, पद नौ और दस में बताई गई परख की प्रक्रिया उत्पन्न की जा सके।

और उसने कहा, हे दानिय्येल, तू अपने मार्ग चला जा; क्योंकि ये वचन अन्तकाल तक के लिये बन्द और मुहरबन्द किए गए हैं। बहुतों को शुद्ध, श्वेत और परखा जाएगा; परन्तु दुष्ट दुष्टता ही करेंगे; और दुष्टों में से कोई समझ न पाएगा, परन्तु बुद्धिमान समझेंगे। दानिय्येल 12:9, 10.

1989 में हिदेकेल की मुहर खुलने के एक उदाहरण के रूप में, इस पर विचार करें कि प्रेरणा ने क्या कहा है।

प्रकाशितवाक्य में बाइबल की सारी पुस्तकें मिलती और समाप्त होती हैं। यहाँ दानिय्येल की पुस्तक का पूरक है। एक भविष्यवाणी है; दूसरी प्रकाशना है। जो पुस्तक मुहरबंद की गई थी, वह प्रकाशितवाक्य नहीं, बल्कि दानिय्येल की भविष्यवाणी का वह भाग है जो अन्तिम दिनों से संबंधित है। दूत ने आज्ञा दी, 'परन्तु तू, हे दानिय्येल, इन वचनों को बन्द कर दे, और पुस्तक पर अन्त के समय तक मुहर लगा दे।' दानिय्येल 12:4। प्रेरितों के काम, 585।

ऊलाई और हिदेकेल दोनों का संबंध अन्तिम दिनों से है, परन्तु एडवेंटवाद केवल यह स्वीकार करने को तैयार रहा है कि 1798 दानिय्येल द्वारा उल्लिखित 'अंत का समय' था, जब उसकी पुस्तक की मुहरें खोली जानी थीं। फिर भी 'अन्तिम दिनों से संबंधित' भविष्यवाणी का भाग अधिक सटीक रूप से दानिय्येल अध्याय ग्यारह की अन्तिम छह आयतों में है, क्योंकि उन आयतों का समापन तब मीकाएल के खड़ा होने पर होता है जब मनुष्य के लिए अनुग्रह का समय समाप्त होता है।

न्याय का दर्शन, जैसा कि दानिय्येल के अध्याय सात, आठ और नौ में चिन्हित किया गया है, 1798 में आने वाले 'अंत के समय' तक मुहरबंद रहा। Ulai के दर्शन के खोले जाने से जो प्रकाश उत्पन्न हुआ, वह अन्वेषण न्याय के आरंभ की घोषणा था, न कि न्याय के समापन की। Hiddekel के दर्शन के साथ जो प्रकाश उन्मोचित हुआ, वह अन्वेषण न्याय के समापन को चिन्हित करता है, और यही दानिय्येल में वह खंड भी है जिसमें 'अन्तिम दिनों से संबंधित भविष्यवाणी का भाग' निहित है।

1798 में मुहर के खुलने ने अन्वेषण न्याय के प्रारंभ की घोषणा की। 1989 में मुहर के खुलने ने अन्वेषण न्याय के निकट आते हुए समापन की घोषणा की। अल्फा और ओमेगा की छाप दानिय्येल की पुस्तक में आसानी से देखी जा सकती है, परन्तु केवल तब जब आप जानते हों कि वह क्या है, और उसे खोजने के लिए इच्छुक हों।

जब दानिय्येल अध्याय 11, पद 45 में कृपाकाल समाप्त होता है, तब अल्फा और ओमेगा का हस्ताक्षर दर्ज किया जाता है। दानिय्येल की पुस्तक का प्रारम्भ ठीक-ठीक यह दर्शाता है कि उसका अंत कहाँ होता है। यह शाब्दिक बाबुल और शाब्दिक इस्राएल के बीच एक शाब्दिक युद्ध से आरम्भ होती है, और शाब्दिक बाबुल विजयी होता है।

यहूदा के राजा यहोयाकीम के राज्य के तीसरे वर्ष में बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर यरूशलेम पर चढ़ आया और उस पर घेरा डाल दिया। और प्रभु ने यहूदा के राजा यहोयाकीम को, साथ ही परमेश्वर के भवन के कुछ पात्रों को, उसके हाथ में कर दिया; और वह उन्हें शिनार देश में अपने देवता के भवन में ले गया, और उन पात्रों को अपने देवता के खजाने के घर में रख दिया। दानिय्येल 1:1, 2.

दानिय्येल के अध्याय ग्यारह के पद पैंतालीस में, 'उत्तर का राजा' के रूप में प्रतीकित आध्यात्मिक बाबुल और 'महिमामय पवित्र पर्वत' द्वारा प्रतिनिधित्व किया गया आध्यात्मिक इस्राएल के बीच का आध्यात्मिक युद्ध समाप्त होता है, और आध्यात्मिक इस्राएल आध्यात्मिक बाबुल पर विजयी होता है।

और वह समुद्रों के बीच, उस महिमामय पवित्र पर्वत पर, अपने राजसी तंबुओं को गाड़ेगा; तथापि उसका अन्त होगा, और कोई उसकी सहायता न करेगा। और उसी समय मीकाएल, वह महान् प्रधान जो तेरी प्रजा के पुत्रों की ओर से खड़ा रहता है, उठ खड़ा होगा; और ऐसा क्लेश का समय होगा, जैसा कि जब से कोई जाति हुई है, उस समय तक कभी न हुआ; और उसी समय तेरी प्रजा में से हर एक, जो पुस्तक में लिखा पाया जाएगा, छुटकारा पाएगा। दानिय्येल 11:45; 12:1.

दानिय्येल और प्रकाशितवाक्य की पुस्तकें एक ही पुस्तक हैं:

"दानिय्येल और प्रकाशितवाक्य की पुस्तकें एक हैं। एक भविष्यवाणी है, दूसरी प्रकाशना; एक पुस्तक मुहरबंद है, दूसरी पुस्तक खुली हुई है। यूहन्ना ने वे रहस्य सुने जो गर्जनाओं ने कहे, पर उसे उन्हें न लिखने की आज्ञा दी

गई।" सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट बाइबल कमेंटरी, खंड 7, 971.

दो पुस्तकें, जो कि एक ही पुस्तक हैं, देवदूत गब्रियल की भविष्यदर्शी शिक्षा की उत्कृष्ट कृति हैं। मैं यह भली-भांति जानकर लिखता हूँ कि गब्रियल ने दानिय्येल और यूहन्ना को जो दिया, वह यीशु से आया था, और यीशु ने उसे पिता से प्राप्त किया था। मेरा उद्देश्य गब्रियल का महिमामंडन करना नहीं, बल्कि दोनों पुस्तकों में निहित प्रमाणों के गहन रहस्योद्घाटन को उजागर करना है—कि अल्फा और ओमेगा ने बाइबिल की व्याख्या के लिए भविष्यसूचक नियम कैसे रचे, जिन्हें इन दोनों पुस्तकों में प्रदर्शित किया जाना था, यदि हम देखने के इच्छुक हों।

मैं आपको याद दिला दूँ कि इस समय मेरा उद्देश्य और इरादा ऊलाई और हिद्देकेल नदियों से संबंधित दो भविष्यवाणियों की व्याख्या प्रस्तुत करना नहीं है। मेरा उद्देश्य और इरादा दानिय्येल की पुस्तक के पहले छह अध्यायों की भविष्यवाणियों से संबंधित है। मैं केवल इस बात का पक्ष रख रहा हूँ कि दानिय्येल और प्रकाशितवाक्य की पुस्तकें शायद परमेश्वर के वचन में सबसे गहन रूप से निर्मित पुस्तकें हैं। वे भविष्यवाणी का संदेश प्रस्तुत करती हैं, साथ ही परमेश्वर के चरित्र की पहचान कराती हैं, और साथ ही उन नियमों की भी पहचान कराती हैं जिन्हें अपनाना आवश्यक है, ताकि कोई व्यक्ति भविष्यवाणियों को जान सके और उसे भी जान सके जिसने वे भविष्यवाणियाँ दीं।

पुस्तकों की गहन प्रकृति का एक और उदाहरण है लैव्यव्यवस्था अध्याय छब्बीस के "सात समय" की दानिय्येल द्वारा की गई प्रस्तुति। "सात समय" की यह भविष्यवाणी परमेश्वर की प्रजा के लिए "ठोकर का पत्थर" रही है और है—चाहे वह प्राचीन इस्राएल में हो, पहले स्वर्गदूत के मिलराइट आंदोलन में, या वर्तमान और भविष्य में तीसरे स्वर्गदूत के आंदोलन में। "ठोकर का पत्थर" की सरल परिभाषा यह है कि कोई ऐसी चीज जिसे आप नहीं देखते, जबकि वह स्पष्ट रूप से वहाँ होती है। अतः जब आप दानिय्येल की पुस्तक में "सात समय" को पहचान लेते हैं, तो आप देखते हैं कि वह स्पष्ट रूप से वहाँ मौजूद है, पर आप यह भी देखते हैं कि जो देखने का चुनाव नहीं करते, उनसे वह छिपा रहता है।

किसी चीज़ को व्याकरण की दृष्टि से खुले में रखते हुए भी छिपा देना एक गहन उपलब्धि है; यह ऐसी बात है जिसे किसी भी मनुष्य द्वारा लिखे गए रहस्य-उपन्यास में समाहित नहीं किया जा सकता। यह एक उत्कृष्ट कृति है, क्योंकि वह वहाँ है—जो ठोकर से बचना चाहते हैं उनके लिए एकदम साफ़ दिखती है, पर जो ठोकर खाने का चुनाव करते हैं उनके लिए उसे देख पाना असंभव है। यूँ कहें कि वह 'आँखों के सामने छिपी' है। यह मानवीय और दैवी तत्वों के संयोग से संभव होता है।

मैं यह दावा करता हूँ, क्योंकि मैं इस बिंदु पर हमें याद दिलाना चाहता हूँ कि 1957 में 'Questions on Doctrine' के प्रकाशन के बाद से कम से कम, एडवेंटवाद के भीतर एक कैथोलिक शिक्षण मौजूद है, और इसने 'फ्यूचर फॉर अमेरिका' के वर्तमान सत्य आंदोलन के भीतर भी अपना अधर्मपूर्ण सिर उठाया है। यह विचार यह है कि देहधारण के समय मसीह ने वह देह नहीं ली जो उन्हें मरियम से विरासत में मिली थी। स्वाभाविक ही, इस शिक्षा के समर्थक इसे इस रूप में नहीं कहते, परंतु अंततः वे यही सिखाते हैं। मैं इसे कैथोलिक शिक्षण कहता हूँ, क्योंकि यह धारणा कि मसीह की देह उतनी ही शुद्ध थी जितनी आदम की देह उसके पाप में गिरने से पहले थी, वही शैतानी तर्क है जिसे कैथोलिक कलीसिया अपनी तथाकथित "निर्मल गर्भाधान" की शिक्षा में प्रयुक्त करती है। और यदि आप "निर्मल गर्भाधान" की मूर्तिपूजक शिक्षा से अपरिचित हैं, तो वह यह सिखाती है कि मसीह की देह अलौकिक रीति से वैसी बनाई गई थी जैसी आदम की निम्न प्रकृति तब थी जब वह और हत्वा अभी पाप में नहीं गिरे थे; या यूँ कहें, जैसा दावा किया जाता है, कि मसीह के पास आदम की पतन-पूर्व, निष्पाप प्रकृति थी। यह यह भी सिखाती है कि स्वयं मरियम को चमत्कारिक रूप से आदम की पाप से पहले वाली, शारीरिक पतन-रहित प्रकृति दी गई, ताकि वह एक परिपूर्ण पात्र बने, जिसमें पवित्र आत्मा शिशु यीशु को उसकी परिपूर्ण देह में देहधारण कराए।

निस्संदेह, एडवेंटिज़्म में वे लोग जो यीशु के शरीर के विषय में बिल्कुल उसी निष्कर्ष का समर्थन करते हैं, मरियम से जुड़े किसी चमत्कार की ओर तो संकेत नहीं करते, पर वे उसी कैथोलिक धारणा को सिखाने के लिए बहन वाइट और बाइबल के अंशों को तोड़-मरोड़ देते हैं। मैं अभी दानिय्येल की पुस्तक की चर्चा से भटक कर क्यों हट गया? मैं उसका

उत्तर दूँगा।

दानिय्येल और प्रकाशितवाक्य की चमत्कारिक संरचना और विन्यास मानवता और दिव्यता के संयोजन से संपन्न हुआ। यीशु परमेश्वर का वचन हैं, और बाइबल परमेश्वर का वचन है। यीशु का दिव्य और मानवीय स्वभाव बाइबल में पूर्णतः प्रदर्शित है। उसमें निहित वचन दिव्य हैं और उनमें हृदय और मन को रूपांतरित करने की सृजनात्मक शक्ति है। वे वचन उसी शक्ति से युक्त हैं जिसने सब कुछ अस्तित्व में लाया। परन्तु जिन मनुष्यों को परमेश्वर ने बाइबल को लिखवाने के लिए अपने साधन के रूप में चुना, वे सब पापी थे। इस समीकरण का मानवीय पक्ष पतित मनुष्यों द्वारा प्रतिनिधित्व किया गया है। बाइबल मानव और दिव्य का सम्मिश्रण है, और भविष्यद्वक्ता भी पापी थे, जैसे आदम की हर संतान रही है। मसीह ने विचार, वचन या कर्म—किसी में भी—कभी पाप नहीं किया। परन्तु उन्होंने अवनति के चार हजार वर्षों के बाद मरियम की देह धारण की। यदि उन्होंने वास्तव में आदम के पाप करने से पहले उसकी निम्न देहगत प्रकृति को ग्रहण किया होता, तो यह आवश्यक ठहराता कि प्रत्येक बाइबिल लेखक भी निष्पाप होता।

"दानिय्येल की पुस्तक में 'सात काल' का 'आँखों के सामने छिपा होना' केवल उन शब्दों से नहीं हुआ जिन्हें दानिय्येल ने दर्ज किया, बल्कि किंग जेम्स बाइबल का अनुवाद करने वाले पतित मनुष्यों द्वारा भी पूरा किया गया। पतित मनुष्यों ने दानिय्येल की पुस्तक को दो बार स्पर्श किया, और जो कुछ संपन्न हुआ, वह ईश्वर की दिव्य व्यवस्था की देखरेख के बिना किसी भी मनुष्य के लिए करना असंभव होता।"

अपने अगले लेख में हम दिखाना शुरू करेंगे कि दैवत्व और मानवता ने लैव्यव्यवस्था छब्बीस के 'सात समय' को दानिय्येल की पुस्तक में सबकी आँखों के सामने कैसे छिपा दिया, क्योंकि परमेश्वर पहले से जानता था, और उसने यहाँ तक कि यह भी योजना बनाई थी, कि यह पहले स्वर्गदूत के आंदोलन में रहने वालों के लिए और तीसरे स्वर्गदूत के आंदोलन में रहने वालों के लिए परीक्षा के रूप में 'ठोकर का पत्थर' हो।

"जो प्रकाश दानिय्येल को परमेश्वर से मिला था, वह विशेष रूप से इन अंतिम दिनों के लिए दिया गया था। शिनार की महान नदियों उलै और हिदेकेल के किनारों पर उसने जो दर्शन देखे थे, वे अब पूरी होने की प्रक्रिया में हैं, और पूर्वकथित सभी घटनाएँ शीघ्र ही घटित होंगी।" Testimonies to Ministers, 112.